भारतीय पर्यटन में
इस्लामिक आर्किटेक्चर

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
(*पूर्व जॉइंट डायरेक्टर*)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

BHAARATEEY PARYATAN MEIN ISLAAMIK AARKITEKCHAR

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights ℗ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-50-5
FIRST EDITION, MAY 2022, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

अख्तर खान अकेला
एडवोकेट एवं सोशल एक्टिविस्ट
कोटा (राजस्थान)

प्राक्कथन

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक दर्शनीय स्थलों का अपार भंडार हैं। देश की ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक सम्पदा के पर्यटन स्थल सदियों से सैलानियों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। देश, राज्य और क्षेत्रीय पर्यटन के आकर्षण के प्रति चेतना जगाने के लिए लेखन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। राजस्थान के लेखक कोटा निवासी डॉ. प्रभात कुमार सिंघल एक ऐसे ही लेखक हैं जो इस चुनौती पूर्ण कार्य को संकल्प के साथ करने में पिछले चालीस वर्षों से निरन्तर जुटे हुए हैं। इतिहास अध्येता, जनप्रिय जनसंपर्क कर्मी और वरिष्ठ पत्रकार के साथ–साथ ये एक गम्भीर लेखक हैं। इनकी हर पुस्तक एक लघु शोध ग्रंथ होती है, जिसका अंदाजा पुस्तक की सन्दर्भ सूची से लगाया जा सकता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इनकी पुस्तकें शोध विद्यार्थियों के लिए भी उतनी ही उपयोगी हैं जितनी पर्यटकों और आम पाठक के लिए।

पर्यटन के विभिन्न पहलुओं पर अनेक पुस्तक लिखने के बाद लेखक की यह कृति मुस्लिम स्थापत्य की खूबसूरत रचनाएं और पर्यटन विषय पर रेखांकित है। हम जब भारतीय स्थापत्य कला की चर्चा करते हैं तो मुस्लिम स्थापत्य भी इसमें शामिल है। भारतीय स्थापत्य के निर्माण में इस्लामिक कला का योगदान भी किसी प्रकार कम नहीं कहा जा सकता। मुस्लिम कला के एक से बढ़ कर एक बेमिसाल उदहारण हमारे सामने हैं।

भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन से से पूर्व कोई भी मुस्लिम पर्यटक स्थल नहीं था। भारत के प्राचीन इतिहास को देखें तो विभिन्न संस्कृति के लोग समय–समय पर इस देश पर शासन करने आएए उनमें मुस्लिम भी एक थे। अन्य संस्कृतियों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया परन्तु मुस्लिम संस्कृति अपनी विशालता और अनेक विशेषताओं की वजह से स्वतंत्र रूप में पल्लवित और पोषित हुई। यही वजह रही कि भारत में मुस्लिम शासकों का एक लम्बा समय रहा और उन्होंने यहां अपना शासन करने के साथ–साथ रहने और बसने के लिए शहर बसाए, किले बनवाए, स्मारक, मीनारें, मस्जिद और उद्यान आदि का भव्य रूप से निर्माण करवाया।

मुस्लिम शासकों के अलग–अलग काल में चाहे सल्तनत काल के कुतुबुद्दीन ऐबक, अलाउद्दीन खिलजी, अल्तमश, मोहम्मद तुगलक, फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ हो या मुगल काल के हुमायूं, बाबर, अकबर, शाहजहां, जहांगीर, औरंगज़ेब, बहादुर शाह ज़फ़र या फिर मध्य्यकाल के दक्षिण भारत के अन्य मुस्लिम शासक सभी के समय में कई आकर्षक इमारतों और पर्यटन स्थलों का निर्माण किया गया। आज अलग–अलग राज्यों के महत्वपूर्ण ज़िलों में विशिष्ठ डिज़ाइन, विशिष्ठ आंतरिक सजावट, बाहरी सजावट के साथ सुंदर इमारतें बनी हैं। चाहे दिल्ली की जामा मस्जिद हो, भोपाल की तजाजुल

मस्जिद या हैदराबाद चार मीनार, गोल कुंडा का क़िला, दिल्ली की कुतुब मीनार, लालकिला, आगरा का ताजमहल, फेहपुर सीकरी का बुलंद दरवाजा, अजमेर में अकबर महल, ढाई दिन का झोंपड़ा, अजमेर–सवाईमाधोपुर रोड पर हाथी भाटा, सहित हर राज्य में मुस्लिम स्थापत्य के आकर्षक निर्माण हैं। इनमें खानकाह, दरगाह, क़िले, महल, शामिल हैं। विशिष्ठ इमारत कला के तहत मीनारों, गुंबद, बडे–बड़े दालान एखूबसूरत पत्थर की नक़्क़ाशी के साथ किये गए निर्माणों में वैज्ञानिक कल्पनाएं भी शामिल हैं।

मैसूर में टीपू सुल्तान महल के निर्माण में सुरक्षा की सभी व्यवस्थाएं शामिल रही। हैदराबाद के गोलकुंडा क़िले में ऐसी वैज्ञानिक पद्धति की जिस तरफ महल में सुनवाई के लिए बादशाह मौजूद रहे, वहां अगर कोई भी किसी भी तरह से पत्थर या खंजर फेंक कर, गोली चलाकर अगर मारने की कोशिश भी करे तो वह उस तक नहीं पहुंच सकती थी। यह सुरक्षात्मक वैज्ञानिक निर्माण रहा है जबकि इसी क़िले के मुख्य द्वार पर एक घंटा ऐसा लगाया गया जिसे बजाने से कोसों दूर तक जहाँ बादशाह रहते थे, वहां आवाज़ पहुंचती थी। आज भी लोग उस जगह ताली बजाकर आवाज़ें सुनते हैं। जहांगीर ने आगरा के लाल किले में जिस प्रकार न्यया की घंटियों की श्रृंखला लगा कर जनसुनवाई की व्यवस्था की उस से जहांगीर का न्याय प्रसिद्ध हो गया। ऐतिहासिक स्तर पर अजमेर का ढाई दिन का झोंपड़े का निर्माण आज भी रहस्यपूर्ण है। वहां अल्पसमय में ऐसा निर्माण, ऐसी नक़्क़ाशी, ऐसे इस्लामिक आयतों के आलेख असम्भव से लगते हैं। कोटा में जैन दिवाकर के सामने मैगज़ीन ग्राउंड के पास दलेर खान का मक़बरा मुगल निर्माण संस्कृ ति का उदाहरण है। टोंक में सुनहरी कोठी एवं जामा मस्जिद की खूबसूरती और आकर्षण देखने योग्य है। ताजमहल आज सात आश्चर्यों में शामिल है। दिल्ली का लाल किला देश में लोकतंत्र का प्रतीक है जहाँ से हर साल तिरंगा फहराकर लोकतंत्र का पर्व

मनाया जाता है।

इस्लामिक इमारतों में भी अलग–अलग काल में अलग तरह के इंजीनियर्स एवं वास्तु विशेषज्ञ रहे हैं जिन्होंने हर कार्यकाल में इमारतों के निर्माण, उनके डिजाइन और आकर्षण में बदलाव किया है। भारत के अलग–अलग राज्यों में इस्लामिक इमारतों को लेकर पर्यटकों में ख़ास उत्साह होने से पर्यटकों की आवाजाही की बहुतायत रहती है और इससे सरकार को भी टिकिट व रखरखाव से करोड़ों करोड़ रूपये की आमदनी होती है। अकेला ताजमहल ही पर्यटन में विदेशी मुद्रा आय का एक प्रमुख पर्यटक स्थल है।

प्रस्तुत कृति में लेखक ने भारत में इस्लामिक स्थापत्य कला को लेकर पर्यटन के एक विशिष्ठ पहलू पर प्रतिनिधि पर्यटक स्थलों को शामिल कर उनकी विशिष्टताओं, विविधताओं, खूबसूरती, ऐतिहासिक तथ्यों कला शैली सहित हर मुख्य बिंदु को सामने लाने का खोज पूर्ण प्रयास किया है। सैलानियों के लिए यह पुस्तक एक जरूरी और उपयोगी मार्गदर्शिका बन गई हैं। पुस्तक की भूमिका के लिए मुझे मौका मिला इसके लिए मैं लेखक का आभार व्यक्त करते हुए उनके श्रमसाध्य कार्य के लिए अपनी ओर से बधाई देता हूं। पुस्तक की सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूं कि पाठकों को इस्लामिक स्थापत्य की जानकारी देने के साथ–साथ के पर्यटन विकास में सहायक सिद्ध होगी।

शुभामनाओं सहित !

अख्तर खान ् 'अकेला'

2–थ–15, रशिदा मंजिल,मेन रोड,विज्ञान नगर,

कोटा (राजस्थान)

मोबाइल––9829086339

लेखकीय

भारतीय स्थापत्य कला की चर्चा करते हैं तो मुस्लिम शासकों के योगदान को विस्मृत नहीं सकते हैं। भारतीय स्थापत्य कला और पर्यटन में इस्लामिक स्थापत्य का योगदान भी किसी प्रकार कम नहीं है। ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से निर्मित इस्लामिक इमारतें, मस्जिद,दरगाह, गुम्बद, मीनारें भारत में पर्यटन विकास में महत्वपूर्ण हैं। मुस्लिम शासकों ने इनका निर्माण कर भारतीय स्थापत्य को समृद्ध किया है। दुनिया भर के सैलानी इन्हें देखने के लिए भारत आते हैं। मुस्लिम ऐतिहासिक एवम धार्मिक महत्व के स्मारकों की धार्मिक सद्भाव और एकता को बनाए रखने में अहम भूमिका है। सामाजिक समरसता की मिसाल है इस्लामिक स्थापत्य कला की इमारतें। यही नहीं मुस्लिम कला ने नई चारबाग़ शैली के उद्यान सहित कई नई स्थापत्य शैलियों के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन कला तत्वों का प्रभाव हिदू और राजपूत शैली के भवनों में भी देखने को मिलता है। मुस्लिम स्थापत्य कला के प्रतीक भवनों की नक्काशी और खूबसूरती इतनी आकर्षक और भव्य है कि पर्यटक इन्हें देख कर आश्चर्यचकित हो कर एक टक निहारते रह जाते हैं।

राजस्थान के अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती गरीब नवाज़ की दरगाह धार्मिक दृष्टि से सम्प्रदायिक सद्भाव का बेहतरीन उदाहरण है वहीं दरगाह स्थापत्य कला में बेजोड़ हैं। दरगाह परिसर में निर्मित अनेक संरचनाएं और मुख्य प्रवेश द्वार बुलंद दरवाजे की स्थापत्य कला देखते ही बनती है। दुनिया के कोने – कोने से सभी धर्मों के आने वाले पर्यटक पूरी आस्था के साथ गरीब नवाज़ की समाधि पर चादर पेश कर मत्था टेकते हैं और खुशहाली की दुआएं मांगते हैं। आगरा के ताजमहल का दुनिया के सात अजूबों में और

यूनेस्को की विश्व धरोहर में दूसरे स्थान पर होना इसके महत्व और लोकप्रियता का अपने आप में परिचायक हैं। आगरा का ही लाल किला, फतेहपुर शहर की अलबेली खूबसूरत इमारतें, दिल्ली की आसमान छूती कुतुबमीनार, हुमायूं का मकबरा और लाल किला जैसी स्थापत्य कला में बेमिसाल इमारतों को विश्व धरोहर का खिताब मिलना मुस्लिम स्थापत्य कला का ही जादू है जो किसी सम्मोहन से कम नहीं है। भारतीय – मुस्लिम कला के इन प्रतिनिधि स्थापत्य स्मारकों के साथ – साथ हैदराबाद की चारमीनार, दिल्ली,आगरा सहित अनेक स्थानों की भव्य मस्जिदें, किले, उद्यान और दक्षिणी भारत में हैदराबाद, अहमदनगर, बीजापुर, बरार, बीदर, गोलकुंडा आदि के अन्य स्मारक पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में मुस्लिम स्थापत्य कला का चरमोत्कर्ष मुगल शासक शाहजहाँ के काल में देखने को मिलता है जब उसने अपनी प्रिय बेगम मुमताज़ की याद में आगरा में यमुना नदी के किनारे ताजमहल , दिल्ली में लाल किला, मोती मस्जिद एवं भारत की सबसे बड़ी मस्जिद जामा मस्जिद का निर्माण कराया। अकबर ने आगरा का लाल किला बनवाया और कुछ दूरी पर राजधानी स्थानांतरित कर फ़तेहपुर सीकरी नगर बसाया और वहां कई इमारतों का निर्माण कराया। उसने दिल्ली में हुमायूं के मकबरे का भी निर्माण कराया। जहाँगीर ने आगरा के सिकंदरा में अकबर के मकबरे का निर्माण कराया। नूरजहाँ ने आगरा में एतमातुददौला का मकबरा एवं शाहदरा में लाहौर के निकट जहाँगीर के मकबरे का निर्माण करवाया। औरंगजेब ने औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनवाया जिसे ताजमहल की नकल माना जाता है। मुस्लिम इमारतों में संगमरमर का प्रथम प्रयोग यहां किया गया।

मुगल काल के पूर्व सल्तनत काल की प्रसिद्ध इमारत कुतुब मीनार

का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू कराया जिसे इल्तुतमिश ने पूर्ण कराया। अजमेर में ख्वाजा मुइनूद्दीन चिश्ती की दरगाह का निर्माण भी इल्तुतमिश ने कराया। इसके समीप जमात खाँ मस्जिद, अलाई मस्जिद का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने करवाया। इसी काल में अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा,बदायूं की जामा मस्जिद,नसीरुद्दीन महमूद का मकबरा और इल्तुतमिश का मकबरा बनाया गया। फिरोज़शाह तुगलक स्थापत्य कला का प्रेमी शासक था। उसने हिसार, फिरोजाबाद, फ़तेहाबाद, फिरोज़शाह कोटला, जौनपुर जैसे कई नगरों की स्थापना की थी। फिरोज़शाह का मकबरा हौज खास के पास दिल्ली में स्थित है।

दक्षिण भारतीय मध्यकालीन स्थापत्य कला में बहमनी और विजयनगर साम्राज्य के 1345 ई.के समय अनेक स्मारकों का निर्माण किया गया। हैदराबाद स्थित चारमीनार का निर्माण 1591 में मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने कराया। गुलबर्गा किला और इसकी मस्जिद स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। कालांतर में बहमनी साम्राज्य टूटकर पाँच सल्तनतों में बंट गया– यह सभी अपनी –अपनी स्थापत्य कला के लिए जाने जाते हैं। बीजापुर के आदिलशाही सल्तनत में भी स्थापत्य कला का विकास हुआ। मुहम्मद अदिल शाह का मकबरा सर्वाधिक प्रमुख है जिसे बनाने में 30 वर्ष लगे थे। इस मकबरे को गोल गुंबज कहा जाता है। बीदर का किला, बीदर शाही राजाओं के मकबरे,बीदर सल्तनत की स्थापत्य क्ला को दर्शाते हैं। भारतीय पर्यटन में इस्लामिक आर्किटेक्चर पुस्तक मुस्लिम स्थापत्य कला की ऐसी ही विशेषताओं पर आधारित हैं। पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण मुस्लिम स्थापत्यकला के प्रतीकों को एक पुस्तक में मणी माला की तरह पिरोने का एक लघु प्रयास किया है।

सर्व प्रथम गुरुदेव इतिहासकार डॉ. बृज किशोर शर्मा, जयपुर को नमन करते हुए इस अकिंचन प्रयास में सक्रिय रूप से सहभागी बने

कोटा के नामचीन एडवोकेट, पत्रकार,लेखक श्री अख्तर खान 'अकेला' का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने न केवल मेरा मार्ग दर्शन किया वरन प्राक्कथन लिख कर पुस्तक की उपादेयता को दुगुनित किया है। मैं श्री अनुज कुमार कुच्छल, सीनियर सेक्शन इंजीनियर, मध्य – पश्चिमी रेल मंडल कोटा एवं कोटा के वरिष्ठ पत्रकार श्री के. डी.अब्बासी का भी आभारी हूं जो कई स्थानों पर समय निकाल कर मेरे साथ गए और मार्गदर्शन किया। इस कृति के निर्माण में विविध प्रकार दिए गए सहयोग के लिए कोटा के भूगोलवेत्ता प्रो.प्रमोद कुमार सिंघल, इतिहासविद प्रो. हुकुम चंद जैन, डॉ.दीपक कुमार श्रीवास्तव संभागीय पुस्तकालयाध्यक्ष राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय,कोटा, का भी ह्रदय से साधुवाद ज्ञापित करता हूं। कंप्यूटर एवं अन्य व्ययवास्थों में सहयोग के लिए तकसीम बानो का भी शुक्रिया अदा करता हूं।

आशा करता हूं कि यह पुस्तक पाठकों को मुस्लिम कला की जानकारी देने और पर्यटन विकास में सहायक होगी। पाठकों के सुझावों के सुझाव स्वागत योग्य हैं।

शुभकामनाओं सहित !

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल

अनुक्रम

(1) आगरा..1-12

(2) अजमेर 13-23

(3) अहमदाबाद.. 24-26

(4) दखखन का ताजमहल बीबी का मकबरा........................... 27-30

(5) टीपू सुल्तान का किला अवशेष सुनाते हैं बुलंदियों की गाथा..... 31-36

(6) भोपाल ताज उल मस्जिद.. 37-40

(7) बीजापुर 41-46

(8) बिहार शेरशाह सूरी का मकबरा 47-48

(9) दिल्ली.. 49-61

(10) वास्तु वैभव का संगम फतेहपुर सीकरी.............................. 62-66

(11) हैदराबाद 67-73

(12) लखनऊ.. 74-79

(13) जौनपुर जामी मस्जिद.. 80-82

(14) विविध 83-94

सन्दर्भ

1. Majumdar, R.C., The History And Culture Of India People, Bombay, 1957.

2. Deva, Krishna, Temples Of North India, National Book Trust, India, 1969.

3. Rajendra Behari Lal, Gujarat, Part 3," People of India: State series, Anthropological Survey of India, Popular Prakashan, 2003,

4. भारती, मीनाक्षी कासलीवाल, भारतीय मूर्ति शिल्प एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2009.

5. त्रिवेदी, एस. डी.,बुंदेलखंड का पुरातत्व, झांसी, 1984.

6. दीक्षित, उमेश दत्त – अनुवादक, श्री निर्वासन, आर.के.,मूल लेखक, दक्षिण भारत के मन्दिर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1995.

7. जैन,(डॉ.) आर.के., जैन तीर्थ वंदना एवं दर्शनीय स्थल, कोटा, 2012.

8. डॉ.सिंघल,प्रभात कुमार ;कुच्छल, अनुज कुमार, भारत की विश्व विरासत – यूनेस्को की सूची में शामिल, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, 2021.

9. डॉ.सिंघल, प्रभात कुमार, राजस्थान के आस्था स्थल, विदित पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 2018.

10. डॉ.सिंघल, प्रभात कुमार, हमारा भारत हमारी शान, वीएसआरडी एकेडमिक पब्लिशिंग, मुंबई, मार्च 2021.

11. डॉ.सिंघल, प्रभात कुमार, आराध्य तीर्थ, मंजु प्रकाशन, कोटा, 2015.

12. गूगल सर्च, विकिपीडिया अन्य सोशल साइट.

13. हिंदी समाचार पोर्टल प्रभा साक्षी– नई दिल्ली, अमर उजाला– नई दिल्ली, प्रेस नोट– उदयपुर एवं हिंदी मीडिया– मुंबई, चलते फिरते – नई दिल्ली.

14. अमरनाथ यात्रा प्रकृति दर्शन और अध्यात्म का योग (सीएमएस). नवभारत टाइम्स, 17 सितंबर 2011 को पुरालेखित.

15. विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित डॉ.सिंघल के आलेख.

16. लेखक द्वारा पर्यटक स्थलों के भ्रमण के अपने अनुभव.

लेखक परिचय

1.	नाम	:	डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
2.	पिता का नाम	:	(स्व.) श्री चमन लाल सिंघल
3	माता का नाम	:	(स्व.)श्रीमती सुमन लता
4.	जन्म तिथि	:	15 अक्टूबर 1953
5.	जन्म स्थान	:	कोटा
6.	विवाह	:	20 मई 1978
7.	पत्नी का नाम	:	श्रीमती मंजू सिंघल
8.	शिक्षा	:	

(i) एम.ए. (इतिहास), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

(ii) पत्रकारिता एवं जन संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

(iii) पी. एचडी. (राजपुताने में पुलिस प्रशासन 1857–1947) कोटा खुला विश्वविद्यालय,कोटा

9. सर्विस

1. गेलेक्सी पब्लिसिटी प्रा. लि., जयपुर एवं इलेक्ट्रो एशियाटिक प्रा. लि.जयपुर (मई 1975 से सितम्बर 1976)
2. ट्यूशन (अक्टूबर 1976 से मार्च 1978)
3. सिंचाई विभाग, जयपुर (जुलाई 1978 से सितम्बर 1978)
4. हिंदुस्तान समाचार न्यूज़ एजेंसी जयपुर एवं राष्ट्रदूत जयपुर (6 वर्ष)
5. सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, राजस्थान में 20 फरवरी 1979 को सहायक जन सम्पर्क अधिकारी पद पर नियुक्ति एवं 1 मार्च 1979 को कोटा सूचना केंद्र में ज्वाइनिंग।
6. 5 अप्रैल 1986 से 10 अप्रैल 1987 तक उदयपुर में

जन जाति क्षेत्रीय विकास विभाग में जन सम्पर्क अधिकारी पद के विरुद्ध नियुक्ति।

7. 11 जून 1987 को जन सम्पर्क अधिकारी पद पर पदोन्नति पर कोटा कार्यालय में नियुक्ति।
8. 30 अगस्त 2003 को सहायक निदेशक पद पर पदोन्नति एवं कोटा कार्यालय में नियुक्ति।
9. 21 जनवरी 2011 से 25.दिसम्बर 2012 तक उदयपुर कार्यालय में सहायक निदेशक।
10. 24 दिसम्बर 2012 को संयुक्त निदेशक पद पर पदोन्नति पर 26 दिसम्बर 2012 को जयपुर मुख्यालय पर ज्वाइनिंग।
11. 11 मार्च 2013 से कोटा कार्यालय में संयुक्त निदेशक।
12. 31 अक्टूबर 2013 की सेवा निवृत्ति।
13. डीआईपीआर जयपुर में 22 अगस्त से 13 अक्टूबर 2013 तक कॉन्टैक्ट पर पुनः नियुक्ति।
14. 6 जनवरी 2021 से 30 अप्रैल 2021 तक कोटा नगर विकास न्यास में विशेषाधिकारी (जन सम्पर्क)।
15. सेवानिवृत्तिके बाद से निरन्तर पत्रकारिता एवं लेखन कार्य।

10. अकादमिक उपलब्धि

1. कल्चरल हेरिटेज एंड टूरिज्म पोटेंशियल प्रशिक्षण (एचएमटी जयपुर 19 से 26 सितम्बर)
2. वूमेंस डेवलपमेंट ट्रेनिग (एचएमटी जयपुर 25 से 30 नवंबर 1991)
3. बेसिक कंप्यूटर ट्रेनिंग (जयपुर 7 दिवसीय)
4. जिला साक्षरता समिति कोटा का मासिक पत्र 'चामल धारा' का तीन वर्ष तक प्रकाशन एवं

सम्पादन।

5. जिला ग्रामीण विकास अभिकरण कोटा की मासिक पत्रिका 'विकास पत्रिका' का प्रकाशन एवं सम्पादन।
6. जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग उदयपुर की मासिक पत्रिका 'आदिवासी विकास' का प्रकाशन एवं सम्पादन।

11. शोध कार्य

1. राजपुताने में पुलिस प्रशासन (1857 से 1947)
2. कोटा जिला. (इतिहास, संस्कृति, समाज, विकास)
3. बूंदी जिला (इतिहास, संस्कृति, समाज, विकास)
4. बारां जिला (इतिहास, संस्कृति, समाज, विकास)
5. झालावाड़ जिला (इतिहास, संस्कृति,समाज, विकास)
6. अजमेर संभाग (इतिहास, संस्कृति, समाज, विकास)
7. उदयपुर जिला (इतिहास, संस्कृति, समाज, विकास)
8. श्रीगंगानगर जिला (इतिहास, संस्कृति, समाज, विकास)
9. सांस्कृतिक हाड़ौती
10. सांस्कृतिक राजस्थान
11 सांस्कृतिक भारत.
12. भारत में समुद्र तटीय संस्कृति.
13. विश्व रेगिस्तान
14. भारत के संग्रहालय.
15. हाड़ौती के स्वतंत्रता सेनानी.
16. एडवेंचर टूरिज्म.
17. चंबल नदी.
18. पत्रकारिता और जनसंचार.

19. भारत में धर्म स्थल.
20. पर्वतीय पर्यटन
21. राजस्थान के आस्था स्थल.
22. कोटा संग्रहालय.
23. उद्यानिकी
24. राजस्थान में पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास.
25. भारत में इस्लामिक स्थापत्य

12. प्रकाशित पुस्तकें

1. कोटा एक विहंगम दृष्टि – अप्रैल 2003
2. हाड़ौती – करोली दिग्दर्शन – अप्रैल 2004
3. जय चंबल – नव साक्षरों के लिए.
4. लोक देवता तेजा जी – नव साक्षरों के लिए
5. हाड़ौती के मन्दिर – नव साक्षरों के लिए.
6. राजस्थान में पुलिस प्रशासन (शोध ग्रंथ) अगस्त 1996.
7. आराध्य तीर्थ – मई 2018
8. राजस्थान के आस्था स्थल (धार्मिक पर्यटन) मई 2018.
9. ऐसा देश है मेरा – भारत भ्रमण – मई 2018
10. अतुल्य अजमेर–विश्व स्तरीय पहचान–अप्रैल 2019
11. कोटा एक विहंगम दृष्टि (द्वितीय संस्करण) नवंबर 2019
12. चंबल तेरी यही कहानी – जून 2020
13. मीडिया संसार (पत्रकारिता और जन संचार) – अगस्त 2020
14. ये है हमारी रंग बिरंगी बूंदी – सितम्बर 2020
15. अद्भुत राजस्थान – मार्च 2021
16. भारत की विश्व विरासत – (यूनेस्को की सूची में

शामिल) – अप्रैल 2021

17. हमारा भारत, हमारी शान – मार्च 2021
18. न्कंपचनत त्रेंजींद ड्ढं ड्ढेंउपत . उंल 2021
19. भारत में समुद्र तटीय पर्यटन – जून 2021
20. विश्व रेगिस्तान का इंद्रधनुष – जुलाई 2021
21. पर्यटन और संग्रहालय –अगस्त 2021
22. पर्वतीय पर्यटन (विशेष सन्दर्भ अरावली)–अक्टूबर 2021
23. रोमांचक साहसिक पर्यटन (एडवेंचर स्पोर्ट्स)– नवंबर 2021
24. मन्दिर संस्कृति (धार्मिक पर्यटन)– फरवरी 2022

13. पुस्तक संपादन

1. स्माइल एंड वर्क कार्टून बुक, रोटरी क्लब, कोटा एवं जिला प्रशासन द्वारा प्रकाशित।
2. प्रगति की मुस्कान, जिला परिषद कोटा द्वारा प्रकाशित।
3. बदलती तस्वीर, नगर विकास न्यास कोटा द्वारा प्रकाशित।
4. आशा की किरण (निराश, तनाव ग्रस्त युवाओं के लिए), हॉप सोसायटी कोटा द्वारा प्रकाशित।
5. स्वातंत्राय स्वर्ण जयंतीका, जिला प्रशासन कोटा एवं सीएफसीएल, गडे पान, कोटा।
6. राजस्थान में पंचायती राज और ग्रामीण विकास।
7. आगे बढ़ता राजस्थान–(विशेष सन्दर्भ उद्योग, व्यापार, वाणिज्य)।
8. श्रीगंगानगर संदर्शिका।
9. अजमेर संभाग संदर्शिका।
10. उद्यानिकी (फूल, फल, सबजी, मसाला और

ओषधीय खेती को बढ़ावा)।

11. राजस्थान और आज का कोटा।
12. मीडिया....जनसंचार माध्यम।
13. मेंटल हेल्थ ,हॉप सोसायटी,कोटा।
14. कर्मयोगी, श्रीकरणी नगर विकास समिति, कोटा।

14. स्मारिका

करीब 100 से ज्यादा स्मारिका का लेखन, संपादन एवं प्रकाशन।

15. समाचार पत्र

कोटा से 'टुडे आईं' पाक्षिक का प्रकाशन एवं सम्पादन।

16. आलेख

वर्ष 1979 से अब तक करीब 10 हज़ार से अधिक आलेख, फीचर, रिपोर्ताज, संपादकीय, यात्रा वृतांत, स्तम्भ देश के राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तरीय समाचार पत्रों, राष्ट्रीय पत्रिकाओं, राज्य और केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों व बोर्डों की पत्रिकाओं एवं राष्ट्रीय न्यूज़ पोर्टल्स पर प्रकाशित।

17. राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन

1. रोमांचक साहसिक पर्यटन पुस्तक पर राष्ट्रीय वर्चुअल संगोष्ठी
2. हमारे जीवन के समृद्ध अतीत की याद दिलाने में संग्रहालय की अहम भूमिका
3. राजस्थान दिवस 30 मार्च 2022 पर 'राजस्थान में पर्यटन की दशा, दिशा और संभावनाएं'
4. विश्व पुस्तक दिवस 23 अप्रैल 2022 पर 'इंटरनेट की आंधी में बरकरार है पुस्तकों का महत्व'

18. सम्मान/पुरस्कार

1. सहायक जनसंपर्क अधिकारी पद पर उत्कृष्ट सेवाओं के लिए कोटा जिला प्रशासन की ओर से

15 अगस्त 1989 को जिला स्तरीय समारोह में सार्वजनिक निर्माण एवं सिंचाई मंत्री श्री ललित किशोर चतुर्वेदी द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया गया.

2. जिला जनसंपर्क अधिकारी पद पर उत्कृष्ट सेवाओं के लिए कोटा जिला प्रशासन की ओर से 26 जनवरी 1993 को जिला स्तरीय समारोह में खेल मंत्री श्री रामकिशन वर्मा द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया गया.
3. पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त करने पर कोटा जिला आफिसर्स क्लब द्वारा 4 फरवरी 1996 को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।
4. सहायक निदेशक पद पर उत्कृष्ट सेवाओं के लिए कोटा जिला प्रशासन की ओर से 15 अगस्त 2010 को जिला स्तरीय स्वाधीनता दिवस समारोह में नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया.
5. संयुक्त निदेशक पद पर पदोन्नति होने पर सूचना केंद्र, उदयपुर में 25 दिसम्बर 2012 को पत्रकारों द्वारा सम्मानित किया गया.
6. कोटा पत्रकार मित्र मंडल द्वारा कोटा में संयुक्त निदेशक पद पर ज्वॉयन करने पर 29 अप्रैल 2013 को सम्मान किया गया.
7. कोटा राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय द्वारा हिन्दी दिवस –2018 पर 'प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान कर 'हिंदी साहित्य सेवा' सम्मान से सम्मानित किया गया.

8. कोटा राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय द्वारा वरिष्ठ नागरिक जन दिवस – 2018 पर प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान कर 'वरिष्ठजन पर्यटक लेखक सम्मान' से सम्मानित किया गया.
9. कोटा राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय द्वारा अंतरराष्ट्रीय वृद्ध जन दिवस – 2019 पर व्योश्री सम्मान – 2019' से सम्मानित किया गया.
10. राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पोर्टल प्रभा साक्षी, नई दिल्ली की 18 वीं वर्षगांठ पर दिल्ली में आयोजित समारोह में 8 नवंबर 2019 को पत्रकारिता और लेखन के क्षेत्र में शोल उढ़ा कर प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर 'हिंदी सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया.
11. पर्यटन के क्षेत्र में कई पुस्तकें लिखने और हाड़ौती क्षेत्र का राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार – प्रसार में उत्कृष्ट कार्य करने पर कोटा की संस्था न्यू इंटरनेशनल द्वारा 6 जनवरी 2021 को 'हाड़ौती गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया.
12. वर्किंग जर्नलिस्ट फेडरेशन ऑफ इंडिया की कोटा इकाई द्वारा 5 दिसम्बर 2021 को 'पत्रकार सम्मान' से सम्मानित किया गया।
13. राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय द्वारा राजस्थान दिवस पर आयोजित 'हमारा रंग बिरंगा राजस्थान' ऑन लाइन राष्ट्रीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में संयोजक की सफल भूमिका के लिए 23 अप्रैल 2022 को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।